अंक 5, सितम्बर 2019

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

:–संस्थान गान–:

''नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।''

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

:–संस्थान गीत–:

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे .... एसपीए, भोपाल।

निदेशक की कलम से...

एक प्रभावी व्यक्तित्व के विकास के लिए जीवन में शिक्षा, संस्कार एवं अनुशासन का बहुत बड़ा योगदान है। एक उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमें अपने लक्ष्य के प्रति एक चित्तमान, दृढ़निश्चयी एवं परिश्रमी होना आवश्यक है। परिश्रम पर पूर्ण आस्था रखने वाले व्यक्ति ही प्रतिस्पर्धाओं में विजय प्राप्त करते हैं। किसी देश में नागरिकों की कर्म साधना और कठिन परिश्रम ही उस देश व राष्ट्र को विश्व के मानचित्र पर प्रतिष्ठित करता है। हम सभी के पास समान योग्यता नहीं है लेकिन अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए हम सभी को अवसर समान मिलते हैं।

संस्थान की हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के पांचवे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका के पूर्व अंकों पर पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के लिये सभी को धन्यवाद।

संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्धारित किया गया है ''अष्टम् अनुसूची में वर्णित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पद बंधों को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का विकास करना संघ सरकार का दायित्व है।''

मैं उम्मीद करता हूं संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के पांचवे अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो.डॉ. एन. श्रीधरन

पंचम दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल का पंचम दीक्षांत समारोह, 11 अक्टूबर 2018 को आई. आई. एस. ई. आर., भोपाल के सभागार में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ।

दीक्षांत समारोह का आरंभ संस्थान गान से हुआ। एस.पी.ए. शासी मण्डल के अध्यक्ष प्रो. बिमल पटेल एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वास्तुकार राज रेवाल ने कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में बताया कि एस.पी.ए. भोपाल, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दी गई एन.आई.आर. एफ. रेंकिंग में पांचवा स्थान एवं टीचिंग एवं लर्निंग के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है। संस्थान रिसर्च एवं कन्सलटेन्सी के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गुणवत्ता सुधार हेतु प्रयास कर रहा है।

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने पूर्व शैक्षणिक वर्षों में संस्थान के शिक्षकों एवं छात्रों द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला एवं आगामी वर्षों में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि भारत में प्रोफेशनलों की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए एस.पी.ए. भोपाल ने दो अतिरिक्त परास्नातक कार्यक्रम (मास्टर ऑफ प्लानिंग इन ट्रांसपोर्ट प्लानिंग एण्ड लॉजिस्टिक मेनेजमेंट एवं मास्टर ऑफ डिज़ाइन) को प्रारंभ किया है।

स्नातक, परास्नातक की 185 उपाधियों से छात्रों को सम्मानित किया गया। श्री सूर्यमणी कुमार (बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर) एवं सुश्री प्रसीदा मुकुन्दन, (मास्टर ऑफ प्लानिंग, अर्बन एण्ड रीज़नल प्लानिंग) को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए चेयरपर्सन मेडल से सम्मानित किया गया। बैचलर्स एवं मास्टर के सभी प्रोग्राम के सात टॉपर्स को प्रवीणता स्वर्ण पदक व बेस्ट थीसिस के लिए सात छात्रों को सर्टिफिकेट प्रदान किये गए।

दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित प्रख्यात वास्तुकार राज़ रेवाल ने अपने उद्‌बोधन में वास्तुकला दर्शन तथा अपने प्रसिद्ध परियोजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने देश में वास्तुकला शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण व्यवस्था तथा इस सन्दर्भ में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण व प्रायोगिक तरीकों पर विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने सभी स्नातकों को बधाई दी।

एस.पी.ए. शासी मण्डल के अध्यक्ष प्रो. बिमल पटेल ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में शिक्षा और प्रोफेशन के मध्य उचित सामंजस्य स्थापित होना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक द्वारा किया गया।

व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है ...

महात्मा गाँधी

स्थापना दिवस पर व्याख्यान समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल का दसवा वां स्थापना दिवस 10 अक्टूबर 2018 को मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री फरहाद कॉन्ट्रेक्टर, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं संभव ट्रस्ट के संस्थापक को आमंत्रित किया गया । संभव ट्रस्ट एक स्वयं सेवी संगठन है जो कि भारत के पिछड़े गांवों की परिस्थितिकी को पुनर्जीवित करने व मजबूत करने का कार्य करती है। श्री फरहाद ने स्थापना दिवस समारोह में ''भारत में जल संचयन संरचना'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

गणतंत्र दिवस समारोह

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 26 जनवरी 2019 को संस्थान परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। समारोह में संस्थान के संकायगण सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारीगण व छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए। संस्थान के निदेशक प्रो.डॉ.एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया व संस्थान के सुरक्षागार्ड ने राष्ट्रीयध्वज को सलामी दी। निदेशक महोदय ने सभा को

संस्थान की आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी दी। अध्यक्ष, छात्र परिषद ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष के दौरान छात्रों की उपलब्धियों के विषय में बताया। उक्त समारोह में छात्र–छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक नृत्य व संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 21 जून 2019 को योग शिविर आयोजित हुआ, उक्त कार्यक्रम में योग के विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, व्याख्यान में जीवन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर विवेकानंद योग केंद्र, भोपाल के विशेषज्ञों द्वारा योग अभ्यास किया गया, छात्रों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने शिविर में सक्रिय रूप से भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नवीन परिसर में 73 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह 15 अगस्त 2019 को मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। संस्थान के छात्रों ने इस अवसर पर गीत एवं नृत्य का प्रदर्शन किया। उत्सव में संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचगारीगण व बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में 15 दिवसीय हिन्दी पखवाड़ा 14 से 28 सितम्बर 2018 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु छात्रों व छात्राओं, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताऐं जैसे ''निबंध लेखन, सुलेख लेखन, हिन्दी टंकण, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली, कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण, हिंदाक्षरी, हिंदी कविता एवं गीत प्रतियोगिता'' इत्यादि आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र बिहारी जी, निदेशक म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल को आमंत्रित किया गया था, प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन, निदेशक, श्री राजेश मोज़ा, कुलसचिव, प्रो. अजय खरे, प्राध्यापक, प्रो. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक, द्वारा संस्थान की हिन्दी पत्रिका

''स्पन्दन'' अंक 4 का विमोचन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय व कुलसचिव महोदय ने पुरस्कार प्रदान किए।

प्रतियोगिता	विजेता (कर्मचारी श्रेणी)
निबंध लेखन	प्रथम– सौरभ तिवारी
	द्वितीय– जितेन्द्र कुमार
	तृतीय– सोनल तिवारी
सुलेख लेखन	प्रथम– अजय कु. विनोदिया
	द्वितीय–श्वेता सक्सेना
	तृतीय– अनुग्रह नगाइच
हिंदी टंकण	प्रथम– पुष्पेन्द्र सिंह
	द्वितीय– वीरेन्द्र श्रीवास्तव
	तृतीय– अनुग्रह नगाइच
अँग्रेजी से हिन्दी अनुवाद	प्रथम– सौरभ तिवारी
	द्वितीय– अनुग्रह नगाइच
	तृतीय– अजय कु. विनोदिया
प्रशासनिक/ तकनीकी शब्दावली	प्रथम– अनुग्रह नगाइच
	द्वितीय– अजय कु. विनोदिया
	तृतीय–घन्श्याम राय
कार्यालय टिप्पण/हिंदी प्रारूपण	प्रथम– सौरभ कश्यप
	द्वितीय– बिन्दु सुरेश
	तृतीय– प्रदीप हेड़ा
हिन्दी के पर्यायवाची शब्द	प्रथम– अजय कु. विनोदिया
	द्वितीय– राम प्रकाश यादव
	तृतीय– क्षमा पुणताम्बेकर
स्वरचित कविता पाठ	प्रथम– अनुग्रह नगाइच, अमित खरे
हिन्दाक्षरी	प्रथम– शिवानी पालीवाल,

	सुशील सोलन्की, अनुग्रह नगाइच, अमित खरे
	द्वितीय– सौरभ वर्मा, श्रुती नायर, विपुल परमार, अद्वैत
	तृतीय– ऋतिक, अक्षय, मधुकर, अक्षत
महात्मा गाँधी के विचारों पर संबोधन	प्रथम–रमेश भोले
	द्वितीय –सौरभ तिवारी
	तृतीय –अमित खरे

प्रतियोगिता	विजेता (छात्र श्रेणी)
निबंध लेखन	प्रथम– अंशिका शर्मा
	द्वितीय –जयति दुदानी
	तृतीय – जया अहिरवार
सुलेख लेखन	प्रथम– अंजलि अहिरवाल
	द्वितीय –मीनू
	तृतीय – आदर्श रस्तोगी
अँग्रेजी से हिन्दी अनुवाद	प्रथम–ग्रीष्मा पटले
	द्वितीय –जयति दुदानी
	तृतीय – भानुजा चौरसिया
हिन्दी के पर्यायवाची शब्द	प्रथम–वैशाली साहू
	द्वितीय–मीनल सिंह
	तृतीय–जयन्त कुमार
स्वरचित कविता पाठ	प्रथम– अभिषेक
	द्वितीय– विधुलेखा तिवारी
महात्मा गाँधी के विचारों पर संबोधन	प्रथम–उज्जवल सिंह
	द्वितीय–अंशिका शर्मा
	तृतीय–जयति दुदानी

राष्ट्रीय एकता दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल ने दिनांक 31 अक्टूबर 2018 को सरदार बल्लभ भाई पटैल के जन्मदिवस पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान में शपथ ग्रहण, मार्च पास्ट, एकता दौड़ आयोजित की गई। एसपीए भोपाल के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज की।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल ने दिनांक 11 नवम्बर 2018 को मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्मदिवस पर राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान की छात्र परिषद द्वारा शिक्षा के महत्व पर डिबेट, क्विज एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन संस्थान परिसर में किया गया। एसपीए भोपाल के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज की। शपथ ग्रहण समारोह संस्थान के सभी कर्मचारियों/अधिकारियों/छात्र–छात्राओं द्वारा किया गया।

कानून और व्यवस्था राजनीतिक शरीर की दवा है और जब राजनीतिक शरीर बीमार पड़े तो दवा जरूर दी जानी चाहिए...

डॉ. भीमराव अम्बेड्कर

स्पिक मैके

कथककली नृत्य का आयोजन

दिनांक 6 सितम्बर 2018 को स्पिक मैके (सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ इण्डियन क्लासिकल म्यूज़िक एण्ड कल्चर अमंग यूथ) द्वारा कथककली नृत्य का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में गुरू सदानन कृष्णन कुट्टी प्रसिद्ध नृत्यक आमंत्रित किये गए थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्थान के छात्रों व सभी संकाय, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों के लिए आयोजित किया गया था।

ध्रुपद गायन का आयोजन

दिनांक 12 नवम्बर 2018 को स्पिक मैके द्वारा ध्रुपद गायन का आयोजन किया गया तथा श्री मलिक ब्रदर को गायन हेतु आमंत्रित किये गया था। उक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का लाभ छात्रों, संकाय संदस्यों व स्टॉफ ने लिया।

सूफी गायन का आयोजन

दिनांक 16 नवम्बर 2018 को स्पिक मैके द्वारा सूफी गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध सूफी गायक श्री मदन गोपाल सिंह आमंत्रित किये गए थे। उक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्थान के छात्रों व सभी संकाय, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों के लिए आयोजित किया गया था।

सारंगी वादन का आयोजन

दिनांक 25 जनवरी 2019 को स्पिक मैके द्वारा सारंगी वादन का सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्थान के छात्रों व सभी संकाय, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों के लिए आयोजित किया गया था।

उक्त कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अभिनायक उस्ताद कमल साबरी को आमंत्रित किया गया था। श्री कमल साबरी

जी ने सारंगी वादन से उपस्थित सभी श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने संगीत का लाभ लिया।

बांसुरी वादन का आयोजन

दिनांक 16 अप्रैल 2019 को स्पिक मैके (सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ इण्डियन क्लासिकल म्यूज़िक एण्ड कल्चर अमंग यूथ) द्वारा बांसुरी वादन का सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्थान के छात्रों व सभी संकाय, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों के लिए आयोजित किया गया था।

उक्त आयोजन में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शक श्री शशांक सुब्रमण्यम को आमंत्रित किया गया था। श्री शशांक सुब्रमण्यम वर्ष 2009 में ग्रेमी अवार्ड से तथा वर्ष 2007 में संगीत नाटक अकादमी सीनियर अवार्ड से भी सम्मानित किये गए हैं।

श्री सुब्रमण्यम ने अपनी टीम के साथ उत्कृष्ट प्रस्तुति दी व उपस्थित सभी श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने संगीत का लाभ लिया।

छात्रों की अभिकल्पना

हिन्दी कार्यशाला: आपदा प्रबंधन जन सामान्य सुरक्षा के उपाय

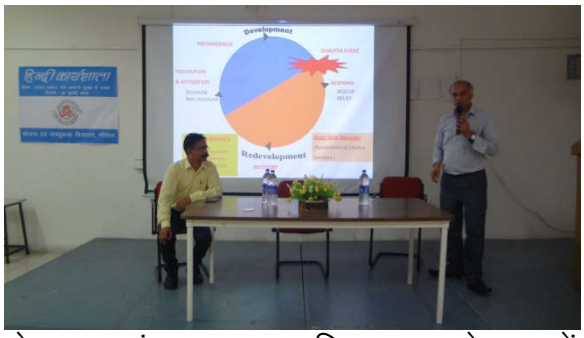

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 25 जुलाई 2019 को संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पहल से संस्थान परिसर के सेमीनार हॉल में आपदा प्रबंधन 'जन सामान्य सुरक्षा के उपाय' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का भव्य आयोजन किया। संस्थान में आयोजित इस कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में डिजास्टर मेनेजमेंट संस्थान के उपनिदेशक डॉ. जार्ज वी. जे. को आमंत्रित किया गया था। विशेषज्ञ महोदय के साथ डिजास्टर मेनेजमेंट संस्थान के निदेशक श्री वी.के. दुबे जी भी उपस्थित हुए।

कार्यशाला का प्रारंभ संस्थान के निदेशक महोदय, प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन द्वारा स्वागत भाषण से किया गया। तदोपरांत डिजास्टर मेनेजमेंट संस्थान के निदेशक द्वारा आपदा

प्रबंधन के विषय पर विशेष संबोधन दिया गया।

डॉ. जार्ज वी. जे. जी ने अपने प्रशिक्षण में आपदाओं के प्रकार जैसे भूकम्प, सुनामी, बाढ़, सूखा, भूस्खलन के विस्तृत विवेचना की एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी संकाय, अधिकारी, कर्मचारी व छात्र छात्राओं को इनसे बचने के उपाय भी बताये। डॉ. जार्ज ने प्रस्तुति के माध्यम से भौगोलिक नक्शे के द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली पृथक–पृथक आपदाओं की भी जानकारी दी व इन आपदाओं के कारण भी बताये। उक्त कार्यशाला में संस्थान परिसर के लगभग एक सौ दस प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस विशेष उपस्थिति में सफलतापूर्वक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई।

हिन्दी कार्यशालाः कार्यालय प्रबंधन एवं लेखा संधारण विषय पर

संस्थान परिसर में दिनांक 21 मई 2019 को 'कार्यालय प्रबंधन एवं लेखा संधारण' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में प्रो. बी. एल. गुप्ता, एन.आई.टी.टी.टी. आर., भोपाल को विशेष व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला संस्थान परिसर के ग्राफिक्स लैब में आयोजित की गई थी। कार्यशाला का प्रारंभ श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव द्वारा स्वागत भाषण से किया गया। तदोपरांत प्रो. गुप्ता ने एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल

जो कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का कार्यालय है, में हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु किये जा रहे प्रयासों, नियमावली व आयोजित प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। प्रो. गुप्ता ने हिन्दी में अनुसंधान हेतु स्वयं द्वारा लिखित पुस्तकों की भी जानकारी दी। कार्यालय प्रबंधन के विषय पर उन्होंने संस्थान स्तर पर किये जाने वाले कार्यों की पूर्व योजना तैयार करने एवं उसे अद्यतन करने के बारे में समझाया। उक्त कार्यशाला में संस्थान के लगभग 40 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दिनांक 24 दिसम्बर 2018 को योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया।

उक्त बैठक में समिति के 40 संस्थाओं/केन्द्रीय शासकीय कार्यालय/

विभाग जो कि भोपाल में स्थित हैं के कार्यालय प्रमुख अपने हिंदी विशेषज्ञों के साथ उपस्थित हुए। बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी. थंगराज, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल ने की। प्रो. न. श्रीधरन, निदेशक एसपीए भोपाल बैठक के सह अध्यक्ष के रूप में शामिल हुए।

बैठक में भोपाल क्षेत्र के सभी संस्थान की हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु किये जा रहे प्रयासों का आकलन किया गया व प्रगति रिपोर्ट भी देखी गई। नराकास सचिव श्रीमति शोभा लेखवानी ने प्रगति रिपोर्ट ऑन लाईन भरने, कार्यशाला आयोजित करने हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने हेतु विशेष मार्गदर्शन दिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दिनांक 19 जुलाई 2019 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2019 की प्रथम अर्धवाषिक बैठक का आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में किया गया। उक्त बैठक में समिति के 60 से अधिक कार्यालय प्रधान उनके हिन्दी अधिकारी व प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी. थंगराज, अध्यक्ष नराकास ने की तथा श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के निदेशक श्री सरित चौधरी भी बैठक में उपस्थित हुए थे।

हृदय कार्यशाला

मानव संसाधन योजना से परे विरासत संसाधनों के प्रबंधन पर चार दिवसीय प्रशिक्षण, मिनिस्ट्री ऑफ होम एण्ड अर्बन अफेयर्स एवं एन.आई.यू.ए. (नेशनल इंस्टूटीयूट ऑफ अर्बन अफेयर्स) द्वारा प्रायोजित किया गया था। यह कार्यशाला 31 जुलाई से 3 अगस्त 2018 तक संरक्षण विभाग, एसपीए भोपाल द्वारा आयोजित की गई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में दस HRIDAY शहरों के बाइस प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री जगन शाह, निदेशक एन.आई.यू.ए. एवं श्री सुमित गक्खड़, अवर सचिव (मानव संसाधन), भारत सरकार उक्त कार्यशाला में उपस्थित थे। कार्यशाला का उद्देश्य धरोहर संसाधनों और परिसंपत्तियों के प्रबंधन के लिए उपकरण विकसित करना था। उक्त कार्यशाला का समन्वयन डॉ. विशाखा कवठेकर, सह प्राध्यापक ने किया था।

मंदिरों के जीर्णोद्धार पर कार्यशाला

एएचआरसी एवं आईसीएचआर अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत ''जीर्णोद्धार एवं मंदिर

संरक्षण'' विषय पर तमिल मंदिरों के संरक्षण के लिए बेसिक पाठ्यक्रम एवं अभ्यास हेतु कार्यशाला का आयोजन 20 फरवरी, 2019 को आईआईटी मद्रास (नेशनल सेंटर फॉर सेफ्टी ऑफ हेरिटेज स्ट्रक्चर्स) के सहयोग से, आईआईटी मद्रास के कॉन्फ्रेंस हॉल में, आईआईटी कार्डिफ यूनिवर्सिटी, यूके, ड्रोन फाउंडेशन एवं स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, भोपाल द्वारा आयोजित किया गया।

भारत में मंदिरों की संरक्षण प्रथाओं पर कार्यशाला

''भारत में मंदिरों की संरक्षण प्रथाओं'' पर एक कार्यशाला लिवरहुम ट्रस्ट परियोजना ''मंदिर वास्तुकला, निरंतरता और संक्रमण की नागर परंपरा'' के तहत एसपीए भोपाल में आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य भारत में ऐतिहासिक मंदिरों और उनके क्षेत्रों के संरक्षण और व्याख्या करने में वर्तमान अनुभव का साझाकरण करना था। इसने भारत में मंदिरों के संरक्षण की दिशा में हाल ही में अभ्यास, नए दृष्टिकोण और तकनीकों, बाधाओं और चुनौतियों (सामग्री, वित्तीय, संस्थागत आदि) की समीक्षा की। कार्यशाला का समन्वयक डॉ. विशाखा कवठेकर, सह प्राध्यापक द्वारा किया गया था।

विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरज तोहफा है, हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए ...

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हैण्ड्स ऑन वर्कशॉप

एसपीए भोपाल और इंटैक हेरिटेज एकेडमी ने 30 अक्टूबर से 1 नवंबर 2018 के मध्य एसपीए भोपाल में हैंड्स–ऑन लाइम वर्कशॉप (चूने पर किये गए अभ्यास) का आयोजन किया। इस कार्यशाला में चूने के उपयोग को समझने एवं उपयोग में लाने के के सिद्धांत के पीछे हुई निराशावादी चर्चाओं के संदर्भ में जानकारी दी गई तथा सत्र के दौरान उक्त वस्तु का व्यवहारिक अभ्यास का उपयोग बताया गया। पाठ्यक्रम में चूने की तैयारी, स्लेजिंग, सेंसिंग और मिश्रण के विभिन्न चरणों के बारे में जानकारी दी गई। हैंड्स–ऑन सत्र भोपाल के सदर मंजिल में आयोजित किया गया था। कार्यशाला का समन्वयन श्री रमेश पी. भोले, सहायक प्राध्यापक द्वारा किया गया था।

जी.आई.एस. कार्यशाला

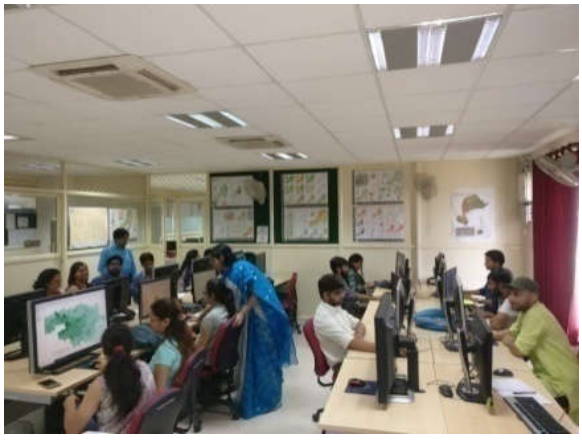

जियो इन्फार्मेटिक सेंटर (जीसीआई) द्वारा दिनांक 2 से 6 जुलाई 2018 के मध्य एसपीए भोपाल परिसर में एक लघु स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जीआईएस के मूल

एप्लीकेशन एवं योजना एवं वास्तुकला में रिमोट सेंसिंग'' विषय पर आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में देश भर से आये बीस प्रतिभागियों में छात्र, संकाय एवं अन्य पेशेवर पटना, ग्वालियर, दिल्ली, विजयवाड़ा एवं भोपाल से शामिल हुए थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को भू–स्थानिक डेटा के निर्माण, प्रसंस्करण और विश्लेषण का एक मूल विचार देना था। इस कार्यक्रम के माध्यम से, प्रतिभागियों ने न केवल जीआईएस में अवधारणाओं और अनुप्रयोगों के बारे में सीखा, बल्कि विभिन्न खुले स्रोत उपकरण भी हैं जिनके माध्यम से वे अपने जीआईएस विश्लेषण को अधिक कुशल बना सकते हैं। कार्यशाला में प्रतिभागियों के अनुभवों को साझा किया गया जिससे प्रतिभागी सीख हासिल कर सकें एवं अपने क्षेत्रों पर छोटी परियोजना को लागू करने के लिए अपनी रूचि को बढ़ा सकें।

प्रिशा क्लब

संस्थान परिसर में प्रिशा क्लब द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 16 मार्च 2019 को पर्सनालिटी रिकालोब्रेशन एवं सॉफ्ट स्किल के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने हेतु हाइपोथैरिपिस्ट डॉ. भास्कर इंद्रकांति एवं डॉ. ऋतु नंदा के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

बहुत सारे लोग पेड़ लगाते हैं लेकिन उनमें से कुछ को ही उसका फल मिलता है।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

छात्र गतिविधि

सिनर्जी 2019

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल के छात्र परिषद द्वारा वर्ष 2019 के सिनर्जी कार्यक्रम का आयोजन संस्थान परिसर में दिनांक 02 से 04 मार्च 2019 के मध्य किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन में मुख्य अतिथि के रूप में श्री बिट्टु शर्मा बठेले, डीएसपी, को आमंत्रित किया गया था। 03 मार्च को निशांत सूरी, हास्य कलाकार को बुलाया गया, 04 मार्च को छात्रों के मध्य आयोजित फैशन शो के जज़ के लिए सुश्री आयुषा भट्टाचार्य, मिस मुम्बई 2018 को आमंत्रित किया गया। उक्त कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ छात्रों ने मनाया।

कलरव कार्यक्रम

संस्थान परिसर में दिनांक 31 अक्टूबर 2018 को एसपीए भोपाल में आए नये छात्रों के स्वागत हेतु छात्र परिषद द्वारा कलरव कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में सीनियर छात्रों ने नवीन छात्रों का स्वागत किया व भेंट, परिचय भी कराया गया।

छात्रों के पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ

61 वां नासा सम्मेलन

61 वें नासा सम्मेलन में एसपीए भोपाल के छात्रों ने निम्नलिखित प्रतियोगिताओं पर विजय प्राप्त कीः

लुईस आई खान ट्राफी में शीर्ष 10 में स्थान बनाया। डेस टेस प्रतियोगिता में शीर्ष 10 में स्थान बनाया। इंडिस्ट्रियल डिज़ाइन ट्राफी में शीर्ष 6 में 2 छात्रों ने स्थान बनाया।

यूसीपी प्रतियोगिता में शीर्ष 10 में स्थान बनाया। एएनडीसी प्रतियोगिता में शीर्ष 36 में स्थान बनाया। लिखित आर्किटेक्चर ट्रॉफी में शीर्ष 37 में 3 छात्रों ने स्थान बनाया।

नेशनल क्रिएटिविटी एप्टीट्यूड टेस्ट (NCAT-2019)

एसपीए भोपाल की छात्रा सुश्री विजया सिंह, बी.आर्क. तृतीय वर्ष ने NCAT-2019 (आठवे नेशनल क्रिएटिविटी एप्टीट्यूड टेस्ट) की तृतीय श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा जुलाई 2019 में दिल्ली में आयोजित क्रिएटिविटी एवं इनोवेशन कोर्स /वर्कशाप में अपनी जगह बनाई।

शहरी विकास संस्थान (यूडीआई), भोपाल का लोगो डिज़ाइन

राज्य सरकार के शहरी विकास संस्थान (यूडीआई), भोपाल, राष्ट्रीय स्तर के संस्थान का लोगो एसपीए भोपाल के छात्र श्री अनिक घोष द्वारा डिजाइन किया गया है उक्त डिजाइन को मुख्य मंत्री म.प्र. शासन की समिति ने स्वीकार किया है।

फोर्ब्स एशिया अंडर - 30 में चयनित

एसपीए भोपाल के पूर्व छात्र अभिनव अग्रवाल (B-Arch 2010-15) को फोर्ब्स एशिया अंडर–30 की कला श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है। अभिनव संगीत समाज के एक सक्रिय सदस्य हैं एवं उन्होंने अपने प्रवास के दौरान कई रचनाओं का निर्माण किया है। स्नातक करने के बाद, वह अपने सपनों का पीछा करने के लिए वालेंसिया के बर्कले स्कूल ऑफ म्यूजिक में चले गए। वह अद्वितीय प्रौद्योगिकी–उन्मुख दृष्टिकोणों के माध्यम से भारतीय लोक संगीत परंपराओं को संरक्षित करने के लिए प्रयत्नरत हैं।

बह्मांड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं। वो हम हीं है जो पहले से अपनी आँखों में हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है ...

स्वामी विवेकानंद

गुरिन्दर सिंह, 2017BARC075, बर्कले प्राइस निबंध लेखन प्रतियोगिता, प्रथम पुरस्कार, ($7500), कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी।

कार्तिकेय देव, रैथमिक स्लेव, 30.03.2019, द्वितीय स्थान, वीआईटी, भोपाल।

अंकुर, तृतीय वर्ष, रिसर्च पेपर, (1) ऑन : डिजास्टर रेजिलेंट डिजाइन स्ट्रेजीस, थ्रू वर्नाकुलर प्रैक्टिस, : केस स्टडी ऑफ माजुली आइसलैण्ड एण्ड बक्खाली, इंडिया, पब्लिश इन स्कोपस, ई–जर्नल, एसीई 2018।

अंकुर, रिसर्च पेपर, (2) : सेंस ऑफ प्लेस एण्ड वर्नाकुलर आर्किटेक्चरः हॉलिस्टिक ऑफ द वेन्चो सेटलमेंट ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया, 1st Icccs and 9th Isvs बालि, इंडोनेशिया (नवम्बर 2018) डॉ. संजीव सिंह द्वारा प्रस्तुत।

विशाल कुमार, छात्र, पांचवा वर्ष, (सिंगापुर में 14 मई 2018 को प्रस्तुति)।

वैशाली साहू, 2016BARC015, 3 rd Year-B.Arch., हील + रीजनरेटिव हाउसिंग फॉर केरेला, First, Uni (28 सितम्बर 2018)।

वैशाली साहू, 2016BARC015, 3 rd Year-B.Arch., ट्रांस प्लान 2018ः इमर्सिव एवोल्यूशन 2018–19 (13 अक्टूबर 2018), शार्टलिस्टेड, जेइ–संग चोन।

जयति दुदानि, 2016BARC073, 3rd – Year वास्तुकला, हील + रीजनरेटिव हाउसिंग फॉर केरेला, First, Uni (28 सितम्बर 2018)।

मनमीत कौर, 2018MLA003, 7 वां नेशनल सेमीनार आर्किटेक्चर फॉर मेसेस, एन अप्रोच टू, पेपर राइटिंग, 'डेवलपमेंट अगेंस्ट इनवायरमेंट, डिपार्टमेंट ऑफ आर्किटेक्चर एण्ड इकिस्टिक, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय।

मनमीत कौर, 2018MLA003, शहरी क्षेत्रीय योजना एवं विकास एवं अल्प संसाधन प्रबंधन (21–22 फरवरी 2019) नई दिल्ली।

सौम्या गुप्ता, 2016BARC061, पोप अप बाजार, टॉप 50 होनरेबल मेन्शन, अर्काज़म।

आस्था प्रतीक, 2016BARC023, हील–रीजनरेटिव हाउसिंग फॉर केरेला, (जनवरी से फरवरी 2019), शार्टलिस्टेड इन टॉप 27, Commun.Uni.Xyz।

भव्यता कटयाल, हील–रीजनरेटिव हाउसिंग फॉर केरेला 2019, प्रथम पुरस्कार, यूएनआई (5 व्यक्तियों के समूह में)

रिद्धित पौल, 2015BARC053, भूदृश्य शहरीकरण पर कार्यशाला की खोज, दिसम्बर 2018, बेस्ट डिजाइन प्रपोजल फॉर टॉली नुल्लाह रिवाइवल (टीम अफर्ट) सर्च एण्ड आईआईटी केजीपी।

आशीष सक्सेना, 2018DR003, पेपर प्रजेंटेड, रिलेजियस बिल्डिंग एण्ड सस्टेनेबल बिहेवियर, लेन्स वर्ड डिस्ट्रीब्यूटेड कान्फ्रेंस, बैंगलोर।

आशीष सक्सेना 2018DR003, इम्पेक्ट ऑफ डिजाइन एलिमेंट्स ऑन ह्यूमन बिहेवियर, (3 से 5 अप्रैल 2019)।

खुशी गौतम, 2017BARC058, अमरावती डिजाइन चेलेंज, 2019, स्टेज 2 में शीर्ष 12 में चयनित, Apcrda, Ethos, Igbc and Cii।

अनुष्का दत्ता, 2017BARC072, स्माल स्केल रेशिडेन्शियल डेवलपमेंट सेनेरियो, विजयवाड़ा में आयोजित 13 से 15 फरवरी के मध्य।

दिवाशा वाधेरा, 2017BARC036, हेप्पी सिटी सबमिट, 2019।

आयुष कुमार, ट्रैनिंग सेमेस्टर, अर्कास्म प्रतियोगिता, टोक्यो एंटी लाइब्रेरी, (01.05. 2018 से 31.07.2018) शीर्ष 50 में उपलब्धि।

खेल गतिविधियां

प्रित्याशा घोष, एम. डेस., द्वितीय, 100 मी. दौड़, तृतीय 200 मी. दौड़, द्वितीय लम्बी कूद, आईआईटी बीएचयू स्पर्धा, राष्ट्रीय स्तर, दिनांक 26 से 28 अक्टूबर 2018।

आकाश प्रियदर्शन साक्षर मखिजा, अनुराग कौशल, अजीत सिंह, सुवन भगत, चित्ता रंजन, ऋगवेद जयखेड़कर, वेनु माधव अन्नवारपु, वरूण टण्डन, विजेता, एसपीए भोपाल एवं आईआईएसईआर भोपाल के मध्य हुए फ्रेण्डली बास्केटबाल मेच, दिनांक 13 नवम्बर 2018।

सुमित संगम, बिजिन आर हम्मेद, रूपम अरोरा, निशांक जैन, अखिलेश सिंह, फैज़ान दानिश, ईश्वर नितिन, हर्षा वर्षान, सारथ चंद्रिका, सुदिप्ता कोहनर, विजेता, इंटर बेच क्रिकेट टूर्नामेंट, बेचलर्स द्वितीय वर्ष, दिनांक 13 से 14 जनवरी 2019।

काड़ा कुलदीप वामसी, हर्षा वर्षान, सूर्या प्रसाद, वसीम खान, आयुष आर्या, मुकेश उपाध्याय, ध्रुवा ज्योति, पादुन, पवन सिंह राठौर, वेनु गोपाल, यशो आदित्य, ईश्वर नितिन, विजेता, फ्रैण्डली क्रिकेट मेच एसपीए, भोपाल विरूद्ध आईआईए, भोपाल। 27 जनवरी 2019।

अनीष अब्दुल्ला, कुंवर सारथेष्ट, अनुराग कौशल, दीपक टी.सी., अखिलेश सिंह, परास्नातक द्वितीय वर्ष के छात्र, विजेता

इंटर बैच फुटबाल टूर्नामेंट, दिनांक 26 से 28 जनवरी 2019।

आकाश प्रियदर्शन, निरंजन गुप्ता, लूनी डॉली, अमित कुमार, अविनो मेरे, जीतु बैंगयांग, काकेरा राजू, पंकज ढांक, स्नातक अंतिम वर्ष के छात्र, विजेता, इंटर बैच वालीबाल टूर्नामेंट, दिनांक 1 से 3 फरवरी 2019।

रेजा प्रसाद, नौशीम अखतर, विदूशी गुप्ता, पूर्णिमा कुमार, भव्यता कटयाल, सावी नाटेकर, शिम्बा फंकोन, विजेता, संयुक्त टीम, विजेता, वॉलीबाल टूर्नामेंट, दिनांक 04 फरवरी 2019।

आकाश प्रियदर्शन, निरंजन गुप्ता, सौम्या देव, सिमोन चैरियान, कल्याण श्री हर्षा, पंकज ढांक, सुभम संत, लूनी डॉली, अविनाश वर्मा, शुभम श्रीवास्तव, विजेता, इंटर बैच बास्केट बॉल टूर्नामेंट, 4 से 10 फरवरी 2019।

एस.पी.ए. भोपाल के अकादमिक भवन का निर्माण

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के अकादमिक भवन का निर्माण शीघ्र ही प्रारंभ हो रहा है। उक्त भवन लगभग 10,000 वर्गमीटर के क्षेत्रफल में बनाया जा रहा है। जिसमें 400 सीटर ऑडिटोरियम, कान्फ्रेंस रूम, छात्रों के अध्ययन हेतु वृहद संख्या में स्टूडियो एवं क्लास रूम होंगे।

अभिव्यक्तियाँ

सब्मिशन व प्रेजेंटेशन से पहली रात एक छात्र की अपने भगवान से बात

क्यूँ बढ़ रहे वक्त के कांटे,
टिक टिक टिक कर हमें डांटे।

सुई अटके या न अटके,
घंट ध्वनि बज जायेगी।
सुबह के लालिमा पश्चात्,
तपती कालीरात आ जायेगी।।

कैसे रोके इस काल को?
कैसे यह काल हमारा है?
इस काल न बुझा यह सवाल,
तो कल विक्राल हमारा है।

क्यूँ बढ़ रहे वक्त के कांटे,
टिक टिक टिक कर हमें डांटे।

हंसो मत, कूदो मत, चिढाओ मत,
पता है हमें, यह जाल भी तुम्हारा है।
ध्यान रखो तुम्हारे उल्लास में छिपा,
जवाब सिर्फ हमारा है।
हो जाएगा हल यह सवाल,
फिर भविष्य काल हमारा है।

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक

आशा

नई आशा नये ख्वाब सजे हैं,
नये साल की शुरूआत से।
नई किरण नया संकल्प लिए हैं,
नये साल की शुरूआत से।
नई राह नई शुरूआत करेंगे,
नये साल की शुरूआत से।
नयी सीख नये सबक लेने है,
नये साल की शुरूआत से।
नयी मंजिलें नये मुकाम मिलेंगे,
नये साल की शुरूआत से।

रेनु पाठक
पुस्तकालय सहायक

चेतना

हरी–भरी धरती पे देखो,
कैसा ये समय आया है।
मानसून की गलतियों के कारण,
धरा पे प्रलय आया है।

पेड़ कट गये, जल दोहन से,
धरा तो बिल्कुल प्यासी है।
सूखा बाट के कहर से,
आई जनजीवन में त्रासदी है।

वक्त रहे जो न चेते तो,
पीढ़ी को क्या पाओगे।
प्रलय की सौगात को क्या,
वंश के साथ बढ़ाओगे।

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

बेपर्दा

उजाले की तलाश में है न तू !
क्या कुछ पल और ठहर जाएगा !
ये जो ख्वाइश है तेरी
कि रौशनी की किरण
तेरे चेहरे से टकरा जाएगी
तो सब सामने आ जाएगा,
तेरा रंग, मेरी पहचान,
मिथ्या वजूद भी नज़र आ जाएगा,

जो बात तुझमें जुदा है
जो बात मुझमें अलग है
ये जो ख़ास है
खूबसूरत है
इसे फर्क में बदल देगा
यूँ जो अब हमें
एक सा महसूस हो रहा है
उजाला उसे
दूरी के एहसास में बदल देगा

गर अँधेरा छिपा देगा ये सब,
परदे में दूरियों को ढक देगा,
तो बेपर्दा होना ज़रूरी है क्या !
क्या कुछ देर ये रात बेहतर नहीं?
ना फासला नज़र आएगा
ना फर्क महसूस हो पाएगा,
क्या कुछ पल को ही सही
थोड़ा अँधेरा बेहतर नहीं?

जयति दुदानि
छात्रा

स्वप्न

होते नहीं ओझल, ख्वाब कोई।
अलकों में कहीं जलते–बुझते।
कुछ छन्द हृदय स्पन्दन में,
अविराम चले हलके–हलके।

आवर्त रहे कुछ व्रत ऐसे,
मौन रहे कुछ रत मन के।
कुछ चाह बनो दृग बिन्दु विरह,
कुछ विरह वेदना मूक रहो।
अंधेरों में रहे कुछ शब्द मौन,
आँखों में सागर तैर गये,
कुछ अश्रु नयन सागर से यों
उतर गये डर के भीतर।

कुछ कर के पुष्प हुए सिंचित,
दृग में ठहरे उस जीवन से।
देखा जो कभी मुड़ कर ,
कुछ पुष्प राह पर अशेष मिले।

अमित खरे
सहायक कुलसचिव

छात्रों की अभिकल्पना

तृष्णा या तृप्ति

तृष्णा

हर लक्ष्य में, हर भेद में,
हर भूख में, हर स्वप्न में,
हूं समाहित में।

हर शोहरत में, हर रौनक में,
हर जरूरत में, हर आदत में
हर ख्वाइश में, आजमाइश में
हूं समाहित में।

हूं संचालक इस धरा की में,
तेरा मुझसे मेल कहां ....

तृप्ति

तू मांग है, मैं पूरक हूं।
तू जरूरत है, मैं संतुष्टि हूं।
तू ग्राही है, मैं दाता हूं।
तू आदी है, मैं अंत हूं।
तेरा–मेरा बस मेल यही है,
मेरा जन्म ही तेरा अंत है।

सुनील कुमार जायसवाल
हिन्दी सहायक

कठिन है जीवन?

मुश्किलों ने थाम रखा है? तो क्या हुआ?
उठ खड़े हो, आगे बढ़ो,
कुछ उम्मीद – होंसला साथ रखो,
मन में तुम विश्वास रखो,
खुली आँखों से देखो सपने,
उन सपनो के लिए प्रयास करो,
क्यूँकि, कड़ी मेहनत और लगन का
दूजा कोई हल नहीं।
जो करे निरंतर प्रयास
जीवन में वो कभी विफल नहीं,
आज करो–अभी करो,
मंजिल में मेहनत का कल नहीं,
विफलताओ से डर कर
बैठ जाना–थम जाना,
ऐसा ना हो पल कभी!
कड़ी मेहनत और लगन का
दूजा कोई हल नहीं।

सपनो पर विश्वास रखो,
उम्मीदों की चंद श्वांस रखो,
अंधकार से लड़ जाओ तुम,
दुनिया में कुछ यूँ साख रखो,
अपने पथ पर चलते रहना,
खुद से ना करना छल कभी,
कड़ी मेहनत और लगन का
दूजा कोई हल नहीं।

गुरु के चरणों में हो अर्पण,
विश्वास हो, और हो समर्पण,
मान ले तू कहना मेरा,
विद्यार्थी का जीवन सफल वही!
कड़ी मेहनत और लगन का
दूजा कोई हल नहीं।

प्रेरणा जैन
लेखपाल

एहसास की बोली

बातें नपी–तुली होती हैं पर एहसास.....
एहसास के परे होते हैं क्योंकि एहसास
निश्चित नहीं होता।

फिर भी ना जाने क्यों बोल बैठी मैं इतना,
देखते हैं कौन सी खबर आती है इस बार।
क्यों? क्या एहसासों को बोलने का अधिकार
नहीं?

देखो तो बातों में ही तो एहसास भरे हैं।
पर सुनो तो, वही बातें नपी–तुली, भाव
विहीन हो जाती हैं।

मानो जैसे काले कोट वाले ने काली स्याही
से कुछ लिख दिया हो।

फिर भी ना जाने क्यों बोल बैठी में इतना,
देखते हैं कौन सी खबर आती है इस बार।

एहसास की बोली मानो जैसे एक
मृगतृष्णा।

बातों से भरी, किर भी एहसासों से परे।
सारे शब्द प्यासे हैं और ढूंढ रहे हैं अपने
एहसासों को।

कितने पास जैसे व्योम में समाए हैं और
इतनी देर जैसे खुद, खुद से ना मिल पाए
हैं।

क्यों हो गई है बातें एहसासों से खाली?
शायद, इसलिए बोल बैठी में इतना.....
अब इंतजार है नपी तुली खबर का।

अपराजिता कौशिक
पीएच.डी. स्कॉलर

जिन्दगी

कुछ पल जिन्दगी से
मांगे जब उधार मैंने,
तो जिन्दगी मुझे ठुकरा कर चल दी।

चलते चलते बोली–कुछ पल क्या,
पूरी उम्र दी थी तुम्हें।
क्या किया तुमने, केवल खेला,
खाया और लुटाया मुझको।।
था भरपूर समां पर,
तुमने खूब गंवाया मुझको।

हाँ। तब मैं तुम्हारे हाथों में थी।।
आज आई मेरी बारी है।
उम्र भर खाई उधार की तुमने,
आखिर में मांगी उधार है।

पर मैं गुजरा हुआ वक्त हूँ,
लौट कर न आ ँगी।
जो चाहो दोबारा पाना मुझको,
तो कद्र करो अपने बचे हुए वक्त की,
तो, उधार नहीं, खुद को तुम पर कुर्बान
कर जाउंगी।

शोभा लेखवाणी, सदस्य सचिव
नराकास क्र. 01, भोपाल

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो
तो पहले सूरज की तरह जलो ...

डॉ. ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम

पक्की सहेली

"तुम्हे लगता है तुम सही कर रही हो?"
"हाँ माँ।"
"खुश रहोगी?"
" हाँ माँ।"
"पर लोग क्या कहेंगे?"

इस बार बेटी को चिढ़ नहीं हुई ये सवाल सुन कर, इसलिये सहजता पूर्वक बोली।

"माँ कब तक सोचेंगे हम ये? बचपन से सुनती आ रही हूँ। बचपन में जब नहाने में आना कानी करती थी, तब भी तुम यही कहती थी, जैसे मेरे शरीर का साफ रहना उनके लिये जरूरी हो।"

"वो तो तुम्हे मनाने का तरीका था "
"अच्छा! और अब?"
"अब ??"
बस यहीं से सारी समस्याएं शुरू हो गई। लोग क्या कहेंगे? जाने उस मुस्कुराहट को क्या कहते हैं। उसी मुस्कुराहट के साथ, माँ का हाथ थाम, वो माँ के सवाल पर सवाल कर बैठी।
"जब तुमने मुझे अकेले पालने का निर्णय लिया था। तब तुमने क्यो नहीं सोचा माँ, कि लोग क्या कहेंगे ?"

माँ चुप रही, और वो बोलती रही, "तुमने मुझे काबिल बनाया। तब क्यो नही डरी तुम? प्रेम विवाह किया मैने, वो भी अपनी उम्र से छोटे लडके से! तब क्यो नहीं डरी तुम ?"

थोडा गुस्ताखी भरा था सवाल पर मुस्कुराहट ने पूरा साथ दिया। माँ के माथे पर थोडी शिकन आई।

माथे पर हाथ फेरते हुए– "बोलो माँ, तब तुमने क्यो नहीं सोचा? क्या तुम्हे लोगो ने डराया नहीं? तब तो तुमने कुछ नही सोचा माँ! अब क्यों सोचती हो?"

"तुम्हें खोना नही चाहती थी, तुम्हारी फिक्र थी और प्रेम भी। तुम्हारी खुशियाँ ही सबकुछ है मेरे लिये, मेरे पास सिर्फ तुम हो मेरी जिम्मेदारी, मेरी बेटी, मेरा प्यार।"

उसने कुछ प्यार से माँ की नजरों में नजरें डालकर कहा,

"माँ! मेरे पास भी तो सिर्फ तुम हो, मेरी पक्की सहेली।"

बाहर से गाड़ी की आवाज सुनकर – "माँ गाड़ी आ गई, सामान रखवाएँ।"

"दामाद जी, और उनके घर वाले क्या सोचेंगे?"

"ये तुम अपने दामाद से क्यो नहीं पूछ लेती? वैसे पीछे पलट कर देख क्यों नहीं लेती तुम, तुम्हे लेने कौन आया है?"

और पीछे से आवाज आई "अब बेटे के घर रहना पसंद करेंगी आप या अपनी पक्की सहेली के?"

सरोज वर्मा
कार्यालय सहायक

दुनिया

मैं कहुं ना कहूं ये फसाना ढूंढ लेती है,
बड़ी शातिर है ये दुनिया बहाना ढूंढ लेती है।

हकीकत भी ज़ीद पे अड़ी है चूर–चूर करने को,
ये आँखें फिर सपना सुहाना ढूंढ लेती है।

कोशिशें तमाम होती हैं मुझे विराने मिले,
जिंदगी हर राह पे एक नया तराना ढूंढ लेती है।

बहुत धोखे हैं जमाने में वफा कौन करे,
दोस्ती पुराने दोस्तों की आज भी याराना ढूंढ लेती है।

इत्तेफाकन उनकी गली से गर गुज़र गए हम,
कायनात सारी उसमें भी कोई अफसाना ढूंढ लेती है।

यूँ तो आज सब हैं मस्त अपनी अपनी दुनिया में फिर भी,
त्योहारों में रिश्तेदारियाँ अपना घराना ढूंढ लेती है।

मैं लाख बचा ँ खुद को दुनिया के गमों से मगर,
चुनौतियाँ जिंदगी की मुझे रोज़ाना ढूंढ लेती है।

बात–बेबात में अपनी हर बात में शायरा 'स्वप्न',
जब बोलती है अपना अंदाज़ शायराना ढूंढ लेती है।

स्वपनिल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

आप मुझे जंजीरों में जकड़ सकते हैं, यातना दे सकते हैं, यहां तक कि आप इस शरीर को नष्ट कर सकते हैं, लेकिन आप कभी भी मेरे विचारों को कैद नहीं कर सकते।

महात्मा गाँधी

मायने

पल दिन महीने साल
क्या यही जिंदगी के मायने है?

हर साल निकल कर चला जाता है
जिंदगी से,
क्या उम्र बढना ही बड़प्पन के
पैमाने है?

गलतियाँ, अनुभव, सुख–दुःख,
कर्तव्य, अधिकार,
क्या ये जिंदगी के आधार है? या है
संपत्ति अपार ??

रिश्ते,भावनाएँ, प्यार, दोस्ती, क्या
जगह है जिंदगी में इनकी?

कभी सोचती हुं मै ये बातें, तो
करती हूँ खुद से वादा,
कोशिश करुँगी जीवन के हर पहलु
को जान सकुं जीना।

निभा सकूं हर कर्तव्य
इंसान होने के,
यही तो कारण है
यहां जनम लेने के।

रेनु पाठक
पुस्तकालय सहायक

साझीदार प्रकृति

उसकी सुंदरता से मनमोहित हो जाना,
उसकी हवाओं के साथ मन में गीत गुनगुनाना,
घास के पर बैठकर खुले आसमान को निहारना,
पूरी सृष्टि जैसे रूक सी गई हो
और मन में बहुत से विचारों का आना।

प्रकृति का प्रभाव मुझपर कुछ ऐसा पड़ता है,
एक वही सुख–दुख का साथी लगता है।
आकाश और सागर, सनातन और शांतिपूर्ण,
सूर्य की किरणें कश्ती मन को सकारात्मक भावों से पूर्ण।

उसे मिट्टी के गुलाब की खुशबू मनमोह जाती,
गर्मियों में आमों का स्वाद जुबान पर छोड़ जाती।।

नदियों के कल–कलाने की धुन,
नन्हीं चिड़िया वही है अपने घोंसलों को बुन,
यही कबूतर पानी पीता रहा दोनों को चुन,
आ जाए कोई फरिश्ता और दे साथ मेरा,
मेरी मनःस्थिति को सुन।

पीपल के पेड़ की छाँव तले,
अपनी परेशानियों को छोड़ देना,
उन बारिश की बूंदों में अपना अहंकार धो देना।

सभी प्राकृतिक तत्वों से ढेर सारी बातें करना,
हिमालय की ँची, शाँत नदियों में खुद को ढूँढना,
सूरज ढलते तक स्वयं में एक आशावादि को तलाशना
और जरूरत पड़े तो कल इस दोस्त के पास फिर आ जाना।

सलोनी अग्रवाल
छात्रा

मेघ

जब हम बारिश मैं भीगने के थे आदि,
मुझे याद है वो पल रखती थी व्रत मेरी दादी,
के दिख जाये सूरज कुछ पल,
बनकर ना रह जाये यह बातें एक बीता हुआ कल,
के जब बहती थी नदियाँ कल–कल।

आज है सभी को रिमझिम फुहारों की आस,
पर अब नहीं लगते सावन के झूलें आस–पास,
अमराई भी नजर नहीं आती जिसमे लगते थे झूले खास।

सड़कों को कर रहें चौड़ा,
पर इसके लिए कर रहें पेड़ों का विचार थोड़ा।
एक–एक दिन सींचकर जो बांधा है थोड़ा–थोड़ा,
विकास के नाम पर पड़ गया अचानक ही हथोड़ा।

नगर नियोजन प्रणाली मैं मानव का है वर्चस्व,
इस होड़ मैं भूल ना जाना वृक्ष ही तो है धरती का सर्वस्व।

मेघों को बुलाने में वृक्ष हैं माहिर,
उमड़ घुमड़ कर मेघ कर रहें बरसने की इच्छा जाहिर।

कुछ प्रयत्न हम भी करें, करने पौधों का संरक्षण,
प्रत्येक व्यक्ति को मिले इस बात का प्रशिक्षण।

नित प्रयत्नों से जब बढ़ जायेगा पेड़ों का प्रमाण,
सुन धरा की पुकार को मेघ डाल देंगे इसमें प्राण ।

क्षमा पुणताम्बेकर
सहायक प्राध्यापक

एसपीए भोपाल शीर्ष 20 वास्तुकला संस्थानों की रैंकिंग में शामिल

वर्ष 2019 में आउटलुक पत्रिका में प्रकाशित इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के सर्वश्रेष्ठ आर्किटेक्चर कॉलेजों की वार्षिक रैंकिंग (दुष्टि स्ट्रेजिक रिसर्च सर्विस के साथ साझेदारी में) के अनुसार भारत के शीर्ष 20 वास्तुकला संस्थानों में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल 6 वे स्थान पर है।

एस.पी.ए. भोपाल के कर्मचारियों का आईआईटी इंदौर में चयन

एस.पी.ए. भोपाल के कर्मचारी श्रीमती बिंदु सुरेश, कनिष्ठ सहायक का चयन मेनेजर के पद पर एवं डॉ रिपन रंजन विश्वास, पुस्तकालय सहायक का चयन मैनेजर (पुस्तकालय) के पद पर आईआईटी इंदौर में हुआ है।

बारिश के इंतजार में - जुलाई

गरमी–गरमी हाय ये गरमी,
अप्रैल–मई–जून गरमी ही गरमी!

सोचा जुलाई ने कि अब मानसुन आएगा,
बारिश कि बूंदों से तन–मन भिगाएगा,
पर ये क्या! जुलाई आया गरमी भरा,
उसके भीगने का सपना रह गया धरा का धरा।

ये सूरज न जाने इस बार क्या चाहता है,
शायद अपना दायरा और बढ़ाना चाहता है,
मार धक्का बादलों को सरका दिया बारिश को एक महिना देर,
बोला जुलाई से अब तू भी मेरी गरमी झेल।

तड़पकर बोला जुलाई ऐसा न करो जुल्म,
सूख जाएंगे नदी–नहर कुछ तो करो रहम,
सुनकर जुलाई की पुकार सूरज ने लिया खुद को छुपा,
आने दिया बारिश को और भरने दिया हर नदी नहर–कुंआ।

करके नमन सूरज को जुलाई ने किया आभार प्रकट,
बोला सूरज से अब तीन महिने ना पहुंचाना गरमी का संकट,
भाई है मेरे अगस्त और सितम्बर उनको भी भीगने देना,
रोज ना निकलना कभी कभी आना सबको बारिश में खेलने देना।

सहमत हुआ सूरज बोला अब रोज ना आ ँगा,
कभी–कभी ही अपनी झलक दिखला ँगा,
भीगने दूंगा इस बारिश में सबको जी भरके,
मैं अब अपनी गरमी और न बढ़ा ँगा।

आह! आया सावन भिगा धरती का हर कोना,
हर जर्रा हर छोर, भिगा जुलाई भी झूम–झूम कर
''बरसो रे मेघा बरसो'' मचा मचा के ये शोर– चारों ओर!!!

स्वप्निल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

जीवन

जीवन, यह मात्र एक शब्द नहीं अपितु एक प्रश्न है जो प्रत्येक मनुष्य की दिनचर्या, उसकी आदतों और रहन–सहन पर निर्भर करता है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन काल में जिस तरह का जीवन यापन करता है उसी की भांति उस मनुष्य की पहचान होती है, एक व्यक्ति सबुह उठ कर शाम तक अपनी दैनिक दिनचर्या में क्या–क्या करता है, क्या खाता है और क्या पीता है तथा कब सोता है कब जागता है, यह सारे तथ्य कहने और सुनने में नैतिक शिक्षा के पाठ की तरह लगते है लेकिन यह स्वस्थ जीवन का मार्गदर्शन देते हैं।

जिस प्रकार पुष्प उचित वातावरण एवं अनुकूल परिस्थिति न मिलने के कारण मुरझा जाते है उसी प्रकार मनुष्य शरीर भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाता। एक स्वस्थ मस्तिष्क एवं शरीर के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रतिदिन उसे स्वस्थ आहार एवं शुद्ध जल प्राप्त हो। जो व्यक्ति नशीले पदार्थों का सेवन करते है उन्हें लगता है कि वे अपना जीवन मनोरंजनपूर्ण जी रहे हैं और ऐसा करने से कोई अति–हानि नहीं होती जिसके फलस्वरूप नशीले पदार्थों का सेवन उनकी दिनचर्या का एक अहम हिस्सा बन जाता है जो उन्हें दुःख में, सुख में, एवं हर परिस्थिति में आवश्यक रूप से ग्रहण करना होता है, जो एक निश्चित समय के उपरांत अपने जीवन को तनाव पूर्ण कर लेते है और अपने साथ–साथ अपने परिजन एवं दोस्तों को भी तनाव का शिकार बनाते है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन को सिगरेट की तरह खत्म करते है एवं जीवन को चिंता और तनाव की आग में झोंक देते हैं और ये चिंता कब चिता में बदल जाती है पता ही नहीं चलता।

खिलते हुए पुष्प को देख मेरा मन हुआ आनंदित,
उसकी खुशबू से मेरा शरीर हुआ सुगंधित।
परन्तु मेरे मन में ना जाने क्यों आशंका है
सोचा पुष्प से पूछ कैसी ये शंका है।

मैने पुष्प से कहा, मेरा जीवन क्यों खिला नहीं,
चिंता और तनाव के सिवा क्यों मुझे कुछ मिला नहीं।

बोली पुष्प सुन ऐ–नादान प्राणी,
नशे में तुमने खत्म कर दी ये जिंदगानी।
मुझे मिली सूरज की रोशनी और शीतल पानी,
परन्तु तुमने सिगरेट के धुंए में उड़ाई अपनी जवानी।

मैने प्राकृतिक नियमों का पूर्णत: पालन किया,
लेकिन तुमने अनुशासन पूर्ण जीवन का उल्लंघन किया।

काश तुम मेरे पास पहले आ जाते
हम तुम्हें जीवन का फलशफा बताते
तुमको सोचना उस वक्त था जब
सिगरेट की समाधी पर थे लेटे
क्या फायदा अब जब नर्क और
स्वर्ग के दरवाजे पर हो बैठे

तुम्हें पता है तुम्हारा परिणाम क्या होगा
वक्त रहते सुधर जाओ तो ही अच्छा होगा
''कभी खोना नहीं जिंदगी, है ये अनमोल
नशीले पदार्थों से बढ़कर है कहीं इसका मोल''

मनोज चौरसिया, इंटर्न (सीसीकेएस)
विशाखा कवठेकर, सहायक प्राध्यापक

परिवर्तन का परिप्रेक्ष्य

इस वर्ष की केरल यात्रा ने एक एहम सीख दी। गत वर्ष की भयंकर बाढ़ के कारण केरल के कई गांव, शहर और पर्यटक स्थल विनष्ट हो चुके थे। कई परिवार बिखर से गए थे। हमें लगा की अब हमारे सुन्दर गांव की दुर्दशा हमसे देखी नहीं जाएगी, पर सच ही कहा गया है...'परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है।' हम हैरान थे और प्रफुल्लित भी, की जैसा हमने सोचा था, वैसा बिल्कुल नहीं था।
हरे–भरे, साफ–स्वच्छ, उन्नत और उत्कृष्ट केरल में आये जानमाल, संपत्ति, संसाधनों और पशुधन की हानि व आर्थिक और मूलभूत संरचनाओं के नुकसान के बावजूद, केरल धीरे धीरे पुर्नस्थापन की ओर अग्रसर था।

केरल पुनः जीवित हो उठा था। केरल की सुन्दरता के नए माईने दिखाई दे रहे थे। परिवर्तन अनिवार्य था। सरकार, संगठनो एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा आर्थिक, भौतिक सहायता एवं सहयोग के अलावा, वो निश्चित ही लोगों का आत्मबल और दृढ़ निश्चय था जिसने उन्हें एक नई शुरुआत के लिए प्रेरित किया। ऐसी विषम परिस्थितियों में बदलाव ही हमें आगे बढ़ाता है।

परिवर्तन की आवश्यकता क्यों है? कई बार, संभलने के लिए हमें एक परिवर्तन प्रक्रिया शुरू करनी पड़ती है। इस सन्दर्भ में बाज की एक कथा बहुत प्रचलित है। बाज औसतन 30 वर्ष तक जीवित रहते हैं। पर इस कथा के अनुसार, यदि वह एक कठिन परिवर्तन प्रक्रिया से गुजरते हैं, तो अपनी आयु लगभग दुगनी कर सकते हैं। 30 वर्ष की आयु में बाज यदि अपने बूढ़े पंजों, चोंच और पंख को अपने शरीर से खींचकर अलग कर दे तो मुमकिन है की ५ महीनों की इस दर्दनाक प्रक्रिया के बाद उसे एक नया जीवन मिल जाए। नए पंजे, चोंच और पंख के साथ एक नयी ऊर्जा से युक्त, वो अतिरिक्त ३० वर्ष और जीवित रह सकता है। ये एक बहुत प्रेरणादायक कथा है। जिस प्रकार एक बाज इस संघर्ष के बाद पुनर्जीवन प्राप्त करता है, उसी प्रकार हम समय पर परिवर्तन द्वारा एक नयी शुरुआत कर सकते हैं।

चार्ल्स डार्विन के अनुसार ''सबसे बलशाली या बुद्धिमान का नहीं अपितु उसी का अस्तित्व रहेगा जिसने परिवर्तन का प्रबंधन सीख लिया हो।'' परिवर्तन का निर्णय अक्सर बहुत मुश्किल और कठोर होता है। हमारे लिए पुरानी वस्तुओं, आदतों, यादों और अन्य परंपराओं, रीति–रिवाजों में बदलाव करना आवश्यक हो जाता है, परन्तु हम बदलाव स्वीकार नहीं कर पाते। प्रायः मन परिवर्तन का विरोध करता है। उन कठिन क्षणों में यदि हम पिछली परिस्थितियों को भूलकर, एक नयी ऊर्जा के साथ, मनोबल रखकर निरंतर चुनौती स्वीकार करें तब हम अपनी पुरानी विवशताओं और बंधनो से मुक्त हो सकते

हैं। केवल भूतकाल के भार से मुक्त होकर ही हम वर्तमान का लाभ उठा सकते हैं।

भगवद गीता में श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं की जब जड़त्व प्रबल होता है तब अज्ञान, निष्क्रियता, लापरवाही और भ्रम पैदा होता है।

अतः हमें ये बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए की परिवर्तन अपरिहार्य और सतत होता है। अनुपयोगी वस्तुओं, कुपरम्पराओं, कड़वी यादों, टूटे हुए रिश्तों, शिकायतों और बिखरे सपनों से परे होकर थोड़े से सकारात्मक परिवर्तन द्वारा जीवन को पूर्णता दें। इनसे हताश होने की बजाय समझदारी इसी में है की समय और संदर्भानुसार हम अपने विचारों में परिपक्वता लाएं और आवश्यकता अनुसार एक बेहतर कल के लिए परिवर्तन को अपनाएँ।

निशा नायर
लेखापाल

भाषा का संस्कृति से सम्बन्ध

यूँ तो भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। क्योंकि मनुष्य के अतिरिक्त भी कई अन्य जीव–जंतु अपनी उस अभिव्यक्ति का संकेत एक दूसरे को किसी न किसी तरह की बोली से देते है।

जब बछड़ा अम्मा,,,,,, की लम्बी आवाज लगाता है और बदले में गाय हुँकार भरती है तो ग्वाला तक उनका मंतब्य समझ जाता है कि,, बछड़ा भूखा है एवं गाय उसे दूध पिलाने के लिए तैयार है। किन्तु उनकी वह भाषा सीमित और प्रकृति प्रदत्त होती है ।

पर मनुष्य में रोने और हंसकर खुशी का इज़हार करने के प्रकृति प्रदत्त गुण को यदि अपवाद मान ले तो शेष शब्दो का ज्ञान और अर्थ उसे समाज से ही ग्रहण करना पड़ता है।

अस्तु यह सिद्ध है कि मनुष्य की भाषा नैसर्गिक नही खुद की परिमार्जित है। अगर वह नैसर्गिक होती तो गुण सूत्र से ही उसे प्राप्त हुई होती।

इसलिए यह कहना गलत न होगा कि मनुष्य के मुँह से निकलने वाली ध्वनि का जब से कुछ अर्थ लगाया जाने लगा होगा तभी से वह बोले गये शब्द भाषा के रूप में परिभाषित होने लगे होंगे।

किन्तु उसे यह भाषा का ज्ञान बहुत बड़े अनुभव के पश्चात प्राप्त हुआ होगा और उसका विस्तार भी बहुत लम्बे समय के अनुभव जनित ज्ञान का प्रतिफल होगा।

मनुष्य ने भाषा का कुछ ज्ञान निश्चय ही चहक रही बुलबुल, प्यासा हूं प्यासा हूं, रट रहे पपीहा, कूक रही कोयल आदि चिड़ियों से लिया होगा तो उसके कुछ ज्ञान का

स्रोत ''हुआ हुआ'' कर रहे शियार से प्राप्त भी रहा होगा।

हिंदी का एक शब्द है ''सर्प'' यह कैसे बना होगा ? और कितने रूपो में परिवर्तित होता लम्बी यात्रा कर हमारे बोलचाल में आया होगा? आइए उस पर ही विचार करते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति में शुरू–शुरू में गुफा या घास फूस की झोपड़ी में रह रहे आदि मानव ने जब सर्प को चिन्हित किया होगा तो सबसे पहले उसने सूखी घास अथवा पत्तो के बीच सर सर की आवाज निकालता एक लम्बे पतले जन्तु को आते देखा होगा जिसके चलने से सर सर सर की ध्वनि ही उसकी पहचान थी।

वह जन्तु आया और छेड़ छाड़ करते परिवार के किसी सदस्य को काट कर चला गया जिससे तीन चार घण्टे में उसकी मृत्यु हो गई। उस दिन से वह सभी गुफा मानव उस,, सर सर,, से सशंकित रहने लगे होंगे और अपने शत्रु के रूप में भी उसे चिन्हित कर लिए होंगे।

किन्तु जब दोबारा वही प्राणी आता दिखा तो उस जानी पहचानी ध्वनि के दुष्परिणाम से परिचित बच्चे भयभीत हो,, सर सर सर,, कह चिल्ला उठे होंगे। और फिर परिवार की सुरक्षा हेतु तैनात कुछ लोग लाठी लेकर दौड़े पडे होंगे। फिर क्या ? एक नव जवान ने अपनी लाठी का ऐसा भर पूर वार किया होगा जिस से निकली ,,सप्प,, के आवाज के साथ उसका काम तमाम हो गया होगा। किन्तु जब वही प्राणी तीसरी बार दिखा होगा तो लोग भयभीत हो ''सर सर'' के बजाय अब ''सर सर सर सर सप्प'' कहने लगे होंगे। जो कालांतर में बदलते बदलते ''सर्प'' हो गया होगा।

फिर तो उन गुफा मानवों के दो अदद फुर्सत के हाथ एवं एक अदद विलक्षण बुद्धि ने ''सर्प'' के रूप में चिन्हित उस जन्तु की अजगर, चित्ती, कौडिहा पनिहा, काला, आदि तमाम उप जातिया तक की पहचान कर उनके रूप रंग आकार प्रकार के अनुसार परिभाषित कर ली होगी।

इसलिए यह कह पाना कठिन है कि हमारी भाषा का एक एक शब्द कितनी लम्बी यात्रा करता, कितने रूपो में परिवर्तित हो हमारे बोल चाल य बिचार अभिव्यक्ति में आया है? यह तो भाषा के उत्पत्ति और विकास की बात हुई। पर किसी क्षेत्र की संस्कृति के विकास में वहां की भाषा और भौगोलिक स्थितियों का बहुत बड़ा प्रभाव होता है।

क्योंकि हमारी रीति, रिवाज, परम्पराएँ, कला, तीज त्यौहार, गीत संगीत, खान–पान, पहनावा, पूजा उपासना, जीवन जीने की शैली इसी के मिले जुले स्वरूप का नाम तो संस्कृति है। जिसमे किसी क्षेत्र की भाषा और भौगोलिक स्थितियों का प्रभाव स्पस्ट दिखता है।

इस तरह भाषा का संस्कृति से बहुत निकट का सम्बंध होता है।

इसी भाषाई और भौगोलिक स्थितियों के कारण संस्कृति का एक स्वरूप लोक संस्कृति के रूप बदल जाता है जो प्रकृति के सन्निग्ध फल फूल कर विकसित होती है ।
उसमें लोक द्वारा अर्जित समस्त ज्ञान समाहित हो उठता है जिसे हम लोक रुचि, लोक त्यौहार, लोक रीति, लोकविश्वास, लोक धारणा, लोकाचार, लोक व्यंजन, लोक चित्र, लोकगीत, लोककला आदि के बिभिन्न रूपो में परिभाषित करने लगते है।

किन्तु प्रसिद्ध व्यंगकार श्री हरि शंकर परसाई का कथन है कि, जो भी संस्कृति होती है वह लोक से ही उपजती है । इसलिए लोक संस्कृति ही है।

लोक से अलग तो कुछ है ही नही? क्योंकि लोक में संस्कृति की बहुत बड़ी अंतर धारा छिपी रहती है जो यथार्थ के विविध स्वरूपो रंगतों को श्रम शीलता के गन्ध से प्रवाहमान करती रहती है।

पद्म श्री बाबूलाल दाहिया
पिथौराबाद, जिला सतना, म.प्र.

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

हार–जीत तो आरंभ से ही जीवन के साथ लगी हुई थी, लगी हुई है, और आगे भी लगी रहेगी। यह जीवन का एक निश्चित और परीक्षित सच है, कि जब दो पक्ष प्रतियोगिता की भावना से आमने–सामने आया करते हैं, तो एक के जीतने पर दूसरे को हारना ही पड़ता है। पतझड़, वसंत, फिर पतझड़ और फिर बसंत, जीवन का ही तो निश्चित –निर्धारित क्रम है।
जब व्यक्ति का मन इस तरह की समतावादी चेतना से भरा रहता है, तब वह साँसारिक हार–जीत की कभी परवाह न कर, अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए शाश्वत पथ पर चल अपनी यात्रा को ठीक से जारी रख पाता है।

मन सभी इंद्रियों का स्वामी एवं केन्द्र है। वह सभी का संचालक भी है। उसी में सबसे पहले कर्म का विचार बनता है। कर्म के लिए समार्पित मन ही वास्तव में शरीर तथा उसकी प्रत्येक इंद्रियों को चुस्त–दुरूस्त रखता है, यह भी एक परीक्षित सत्य है।

जिस मन में खेल–भावना भरी रहती है, वहीं मन जीवन की अच्छी–बुरी, प्रत्येक स्थिति का सामना कर सकता है। ऐसी मानसिकता बनाकर खेलने वाला यदि हार भी जाएगा, तब भी उसका मन दुःखी व निराश होकर नहीं बैठेगा, बल्कि अपनी कमियों–कमजोरियों पर बार–बार जब तक खेलता रहेगा जब तक वह अपनी हार को जीत में न बदल दे।

मानव समाज ने अपने आरंभ काल से लेकर अब तक जितनी प्रगति, जितना विकास किया है। उसके लिए उसने न

जाने कितनी विघ्न, बाधाएँ सहीं, कितनी असफलताएँ झेली और सफल सिद्धांतों के लिए कितने बार असफल परीक्षण करे, कहाँ है उन सबका हिसाब? यदि वह कुछ विघ्न–बाधाएँ देखकर, कुछ असफल परीक्षणों के बाद ही थक–हारकर बैठ जाता, तो आज तक की उन्नत यात्रा भला क्यों और कैसे कर पाता?

मानव–मन हार को हार मान ही नहीं सकता। एक सच्चे मनुष्य का मन तो हमेशा जीत के आनंदोल्लास से भरा रहता है। उत्साह से भरे उसके कर्मठ मन को उठता हुआ हर कदम जीत या सफलता को निकटतर खींचता हुआ प्रतीत होता है। वास्तव में सृदृढ मन के लिए हार का कुछ अर्थ या प्रयोजन नहीं हुआ करता। वह प्रयत्न को ही सर्वोच्च महत्व दिया करता है। ऐसे सुदृढ़ मन व्यक्तियों से जीत कभी दूर रह भी नहीं सकती, बल्कि कच्चे धागे से भी खिंची चली आती है। उनके लिए ही एक छोटी सी हार आगे चलकर एक बड़ी जीत का कारण बनती है।

अनुग्रह नागाइच
सहायक प्राध्यापक

डिज़ाइन छात्रों के प्रोजेक्ट के नये आयाम

एसपीए भोपाल के डिजाइन के छात्रों को हर सेमेस्टर में अपनी अभिरूचि को दिखाने की स्वतंत्रता दी जाती है। अपने हिसाब से प्रोजेक्ट चुनने की! सेमेस्टर में वे क्या और किस विषय पर काम करेंगे, इसमें संकाय सदस्य का मार्गदर्शन तो होता है, लेकिन चयन छात्रों का ही होता है। पूर्व वर्ष से प्रारंभ हुए इस अभिरूचि बेस्ड क्रेडिट सिस्टम में छात्रों ने अब तक काफी कुछ क्रिएटिव गढ़ने की कोशिश की है। छात्रों ने पौधों के लिए एक रूझान विकसित करने के मकसद से गमलों को एक्सप्रेशन देकर रोचक बनाया है।

vko’;d % bl if=dk esa izdkf’kr leLr jpukvksa ds fy, ys[kd Lo;a ftEesnkj gksaxsA

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 5, सितम्बर 2019

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

सदस्य

राजेश मोज़ा, कुलसचिव
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
श्री शाजू वर्गीज़, उपकुलसचिव
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
सुश्री जयति दुदानी, छात्रा (वास्तुकला)

सम्पादक मण्डल

श्री सौरभ पोपली, सह प्राध्यापक
श्रीमती विशाखा कवठेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री शोमित दिलिप बड़े, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव वैद्य, सहायक प्राध्यापक
श्री आशिष पाटिल, सहायक प्राध्यापक
श्री मकसूद आलम अंसारी, सहायक अभियंता
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
सुश्री जयति दुदानी, छात्रा (वास्तुकला)

पत्रिका के मुख्य पृष्ठ का अभिकल्पन

सुश्री अनमोल गुप्ता, छात्रा (भू द्रश्य)

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा वास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालवा सल्तनत की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं योजना एवं वास्तुकला विद्यालय स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित "S" अग्नि "P" वायु तरंग एवं "A" पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रः विशारदः श्समरांन्गना सूत्रधार से उद्धृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिए, प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिए तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
नीलवड़ रोड, भौरी, भोपाल (म.प्र.) - ४६२ ०३० (भारत)
Website: www.spabhopal.ac.in